Chapter-6

-=: षष्ठ अध्याय :=-

: कमलेश्वर के कथा-साहित्य का शिल्प-सौष्ठव, कथोपकथन तथा भाषिक संरचना : उपन्यास तथा कहानी दोनों के परिप्रेक्ष्य में :

षष्ठ अध्याय

कमलेश्वर के कथा - साहित्य का शिल्प सौष्ठव, कथोपकथन तथा भाषिक संरचना

§अ§ कमलेश्वर के कथा - साहित्य का शिल्प - सौष्ठव :

प्रस्तावना : इससे पूर्व कि हम कमलेश्वरजी के उपन्यासों की शिल्प - विधि एवं शैली सौष्ठव की चर्चा करें, यह आवश्यक है कि पृष्ठभूमि रूप में हम देखें कि कमलेश्वर जी की रचनाओं में परिभाषित एवं वर्गीकृत शैलियों तथा शिल्प - विधियों का कहां तक प्रयोग हुआ है ।

हिन्दी उपन्यासों में जितनी बहुरूपता विषयों के क्षेत्र में है, उससे कहीं अधिक शैलीगत विविधता दृष्टिगोचर होती है । संस्कृत के आचार्य वामन ने शैली को "रीति" की संज्ञा देते हुए इसे काव्य की आत्मा माना था । और रीति की परिभाषा देते हुए लिखा था --

" विशिष्ट पदरचना रीति : §काव्यलंकार सूत्र 1/2/78 अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध आलोचक ने शैली की परिभाषा इन शब्दों में दी है -- "शैली अभिव्यक्ति का विशिष्ट अंग है।"§1§ इस आलोचक ने " Style is the man himself " फोकन की इस उक्ति को अपने ढंग से प्रस्तुत करते हुए लिखा है -- "शैली से अभिप्राय उस विशिष्ट एवं वैयक्तिक अभिव्यक्ति विधि से है, जिसके द्वारा हम किसी लेखक को पहचानते हैं ।"§2§

अतः प्रत्येक लेखक की अपनी एक विशिष्ट रचना पद्धति होती है, जिसे शैली कहते हैं । शैली शिल्प के आधिन है । दोनों का निकट सम्बन्ध है, और दोनों एक दूसरे की पूरक हैं । शैली का सम्बन्ध कथाकार के व्यक्तित्व के साथ ही भावाभिव्यक्ति एवं भाषा के विशेष परिधान से है । यह शैली उसके विचार, भाव, कल्पना, संस्कार, स्वभाव, प्रतिभा और जीवन दृष्टि के अनुरूप ढलती है । शिल्प इस शैली का दिशा - निर्देश करता है । क्योंकि शिल्प - विधि का सम्बन्ध रूप - रचना की समस्त प्रतिक्रियाओं से है, अतः किसी भी रचना की शिल्प - विधि के सम्बन्ध में जानने के लिये हमें उस रचना में काम आने वाली विधियों, रीतियों तथा रूपों की ओर विशेष ध्यान देना पड़ता है । शिल्प, विधा का सम्पूर्ण ढाँचा है, तो शैली उस ढाँचे की रीति । इसीलिए शैली की जानकारी के लिए शिल्प की भांति पूर्ण ढांचे पर ध्यान न देकर रचना की भाषा एवं उसके प्रवाह की रीति आदि पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करनी पड़ती है । शिल्प शैली का स्वामी है ।

---

1. 'Style is the technique of expression "-
1. The Problem of style, J. Middleton Murry. P. 5
2. Style means that personal idiosyncracy of expression by which we recognise a writer. Ibid, P. 4

उसका लक्ष्य तो यह है कि कथा किस भाँति संयोजित हो, पात्र किस प्रकार नियोजित हो, जीवन दर्शन कैसे उँडेला जाय आदि । इस लक्ष्य की सबसे सहायिका शैली होती है।

शिल्प - विधि का क्षेत्र व्यापक है, और शैली का क्षेत्र सीमित है । शैली व्यक्तिपरक होती है, जबकि शिल्प, वस्तुपरक । साहित्यकार की रुचि उसके शिल्प को अवश्य प्रभावित करती है, किन्तु इसके अनुरूप ही शिल्प का निर्माण नहीं होता जबकि शैली कथाकार की रुचि के अनुरूप ही नियोजित होती है । समाज, इतिहास या अंचल का प्रबन्धात्मक चित्रण केवल वर्णनात्मक शिल्प द्वारा संयोजित हो सकता है, अतः यह तो वस्तुपरक हुआ, जबकि किसी भी विषयवस्तु के चित्रण के लिए अनिवार्य रूप से किसी एक शैली को अपनाना आवश्यक नहीं है । ऐसे चित्रण में लेखक एकाधिक शैलियों का अवलम्ब नहीं है । ऐसे चित्रण में लेखक एकाधिक शैलियों का अवलम्ब लेता है ।

शिल्प - विधि के अनेक प्रकार है जिनके सम्बन्ध में हिन्दी के अधिकांश आलोचक निश्चयात्मक रूप से कुछ भी कहने में असमर्थ हैं । इसी सम्बन्ध में एक आलोचक लिखता है-- " ऐसे ही न जाने कितने प्रयोग आधुनिक उपन्यास साहित्य में किये जा रहे हैं । यह उसका विकास - काल है । अतः शिल्प प्रकार के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी कहना न तो सम्भव है, और न उचित है ।"§1§

डॉ० प्रतापनारायण टंडन ने अपने शोध प्रबन्ध में विविध शिल्प - विधियों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है, किन्तु उसे वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता । इस विषय में डॉ० भटनागर का कहना है -- "डॉ० टण्डन का यह विभाजन एवं वर्गीकरण शिल्पगत न होकर विषय और वस्तुगत हो गया है । इस वर्गीकरण द्वारा उपन्यास साहित्य का अध्ययन करने से भ्रामकता की वृद्धि हुई है। "§2§ यह कथन तथ्यपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि डॉ० टण्डन विषय एवं शिल्प को पृथक करके विचार नहीं कर सके हैं, इसके परिणाम स्वरूप उपर्युक्त भ्रांति उत्पन्न हुई है । डॉ० भटनागर ने अपने शोध - प्रबन्ध में निम्नलिखित पांच शिल्प - विधियों का उल्लेख किया है :-

1. वर्णनात्मक (Descriptive)
2. विश्लेषणात्मक (Analytical)
3. प्रतीकात्मक (Symbolical)
4. नाटकीय (Dramatic)
5. समन्वित (Mixed)

---

1. हिन्दी उपन्यास और यथार्थ : डॉ० त्रिभुवनसिंह, पृ० - 80
2. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य - डॉ० प्रेम भटनागर - पृ० 38

इसे शिल्प-विधियों का अन्तिम वर्गीकरण नहीं कहा जा सकता, तथापि यह वैज्ञानिक अवश्य प्रतीत होता है । इससे वर्तमान असंगतियों एवं भ्रान्तियों का कुछ अंशों में निवारण अवश्य होता है । कमलेश्वर जी ने प्रतीकात्मक एवं नाटकीय शिल्प-विधि का प्रयोग नहीं किया है । जिन शिल्प - विधियों में उन्होंने अपने उपन्यासों की रचना की है, उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर लेना अनुचित न होगा ।

§अ§ वर्णनात्मक शिल्प - विधि :

इसके द्वारा उपन्यास में जीवन के विस्तृत क्षेत्र का चित्रण विवरण रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इस विधि में इतिहासकार के समान ही उपन्यासकार के पास सुविधाएँ रहती है । जीवन के किसी भी क्षेत्र को वह अपनी कथा का माध्यम बना सकता है, घटनाओं का बाहुल्य, पात्रों का आधिक्य, लम्बे सम्वाद आदि अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है । कथाकार को वातावरण के प्रसार एवं दार्शनिक विवेचन की पूर्ण सुविधा है, पात्रों के अन्तद्वन्द्व चित्रण की आवश्यकता नहीं होती । इस विधि के उपन्यासों का कथानक इतिवृतात्मक होता है । कथा भले ही सुसंगठित न हो, किन्तु विचार, तथा समस्या अवश्य उठाई जाती है । ये समस्याएँ प्रायः सामाजिक होती हैं, परन्तु राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक के लिए भी अवकाश रहता है । चरित्र - चित्रण में पात्रों की बहुलता रहती है, ये पात्र वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके चरित्र का चित्रण ही होता है उसका विश्लेषण नहीं होता । ये पात्र अधिकतर समाजोन्मुख होते हैं, उनके बाह्य पक्ष का चित्रण ही होता है उसका विश्लेषण नहीं होता । [illegible] । इस विधि में लिखा गया उपन्यास साहित्य चार शैलियों में उपलब्ध है, वे हैं :-

§1§ अन्य पुरुष शैली §2§ आत्मकथात्मक शैली

§3§ पत्र शैली और §4§ डायरी शैली

कमलेश्वर जी के उपन्यास प्रथम दो शैलियों में ही रचे गये हैं, अतः हम उन पर ही विचार करेंगे ।

§1§ अन्य पुरुष शैली :

यह सर्वाधिक प्रचलित है । लगभग सभी उपन्यासकारों ने अपनी अधिकांश रचनाएं इस शैली में की है । इसमें रचयिता एक इतिहासकार की भाँति कथा का वर्णन करता है, कथा का सूत्र पूर्णतः उसके हाथ में रहता है । वह अपने लक्ष्य से दूर नहीं जाता ।

लेखक आदर्शवादी है, तो समाज की यथार्थ परिस्थिति का वर्णन वह कभी नहीं करेगा और यथार्थवादी है, तो समाज के कुत्सित रूप दिखाकर ही उसे शान्ति होगी । इस शैली को अपनाने के कारण लेखक अपनी ओर से सब कुछ कहने की छूट रखता है ।

कमलेश्वर जी ने लगभग नौ उपन्यासो की रचना की है । उनके प्रारम्भिक उपन्यास वर्णनात्मक शिल्प के अन्तर्गत आते हैं ।

§2§ आत्मकथात्मक शैली :

इस शैली में लिखे गये उपन्यासों में एक पात्र की ओर से सम्पूर्ण कथा कही जाती है । इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह पात्र उपन्यासकार के दृष्टिकोण एवं मान्यताओं आदि का प्रतिनिधि है, किन्तु बहुधा ऐसा ही होता है । जब इससे विपरीत होता है तो लेखक के दृष्टिकोण को पाठक सरलतापूर्वक नहीं समझ पाता । इस शैली में "मैं" का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है ।

§अ§ जब नायक ही कथा कहता है और वही सबसे महत्वपूर्ण पात्र होता है । उसके चारों ओर उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक घूमता रहता है ।
जैसे :- "डाक बंगला" में उपन्यास का नायक तिलक और इरा है इरा तिलक को अपनी सारी बाते सुनाती है और तिलक उसे याद करके कहता है । कथानक इन दोनों के चारों ओर घूमता रहता है ।

§आ§ इस शैली की कथा में वास्तविक नायक तो एक ही होता है, किन्तु कथा अनेक पात्रों द्वारा कही जाती है । उदाहरण के रूप में कमलेश्वर जी के "आगामी अतित" का नायक कमल बोस है तथापि चांदनी, चंदा द्वारा कथा कही गई है । "समुद्र में खोया - हुआ आदमी" का नायक बिरेन है, श्यामलाल, रम्मी, हरबंस कथा कहते हैं ।
"तीसरा आदमी" का नायक नरेश है, तथापि चित्रा, सुमंत कथा कहते हैं ।

कमलेश्वर जी के अधिकतर उपन्यास आत्मकथात्मक शैली और अन्य पुरुष शैली में ही अधिकतर देखने को मिलता है ।

§2§ विश्लेषणात्मक शिल्प विधि :

यह हिन्दी उपन्यास - शिल्प के विकास में एक बहुत बड़ा मोड़ है । इस विधि के प्रयोग से उपन्यासकार विषय - वस्तु, पात्र, विचार तथा वातावरण को नवीन ढंग से प्रस्तुत करता है । कथाकार जीवन के एक पहलू को लेकर विशेषज्ञ की भांति उस पर

प्रकाश डालता है । इस विधि के विकास के साथ ही प्लाट प्रधान विषय - वस्तु का ह्रास आरम्भ हुआ, शनैः शनैः बाह्यात्मकता से मुक्त होकर कथा अनुभूति पर आधारित हुई । मानव के अन्तर्मन में परस्पर विरोधी विचारों, संघर्ष, तनाव, कुण्ठा, संत्रास, चिन्ता तथा आशंका को अभिव्यक्ति मिलने लगी । कथाकारों ने वैयक्तिक जीवन को विषय - वस्तु के रूप में स्वीकार किया, अचेतन मन को वे प्रस्तुत करने लगे । उपन्यास की अन्तर्प्रयाण वृति ही मूल रूप से इस विधि के नियामक तत्वों में से एक है, तत्व मनोविज्ञान का द्रुत विकास है । मनोविज्ञान अन्तर्गत इस विधि के उपन्यासों में मूल केन्द्र कथा, घटना या सामाजिक समस्या न होकर वैयक्तिक अन्तश्चेतना में वर्तमान कोई ग्रन्थि या स्थिति होती है, जिसका सम्बन्ध अधिकतर हीनता या कामग्रंथि से होता है, जो व्यक्ति के जीवन में विपर्यस्तता ला देती है और उससे असामाजिक, अवाँछित कार्य करती है, जिससे व्यक्ति का व्यवहार जटिल तथा अकल्पनीय लगता है ।

इस विधि के मूलाधार मनोविज्ञान के साथ ही दर्शन - शास्त्र को भी उत्स माना जा सकता है । इस विधि द्वारा उपन्यास की घटनाएँ वाह्यसंसार से रहकर मनस्तत्व में प्रवेश कर लेती है जिससे उनमें सूक्ष्मता आ जाती है । ऐसे उपन्यासों में कथातत्व गोण और वह भी सुसंगठित नहीं होता, कार्यकारण की श्रृंखला भी नियमित नहीं रहती तथा चरित्र-चित्रण में पात्रों के वैयक्तिक का पोषण होता है । समाज तथा समस्या का विश्लेषण व्यक्ति के माध्यम से किया जाता है ।

विश्लेषणात्मक कथा - विधान में उपन्यासों की द्वितीय प्रमुख प्रवृति अन्तर्मुखी योजना है जिसमें अनुभूति के आत्मनिष्ठ रूप को अधिक महत्व प्राप्त है तथा वर्णित घटनाएँ पात्रों की मानसिकता में प्रवेश करके अब नाना द्वन्द्व दिखाने लगी है । इन उपन्यासों में सुसंगठित कथा - वस्तु के प्रति उदासीनता होती है । कथा की समयावधि तथा सामग्री में भी अन्तर आ गया । "तीसरा आदमी" में नरेश की वैयक्तिक कुण्ठा को व्यक्त किया है । इस कथा - विधान में विस्तार का स्थान गहनता तथा वर्णन का विश्लेषण ने लिया। कार्य - कारण परम्परा का पालन भी कम हो गया और आदि, मध्य एवं अन्त का बन्धन नहीं रहता, क्योंकि इनका सम्बन्ध बाह्य जगत से है ।

चिन्तन प्रधान वातावरण :

इस विधि के उपन्यास दार्शनिक ऊहापोह के कारण चिन्तन - प्रधान वातावरण प्रस्तुत करते हैं । जिसमें दार्शनिकता उपन्यासों की विशेषता बन चुकी है । उपन्यासकार

कथा को सीमित कर प्रत्येक घटना के साथ चिन्तनमय वातावरण का सृजन करता चलता है । इन उपन्यासों में नायक एकान्तवास का अवसर पाते हैं तथा उस समय मनन भी करते हैं । विश्लेषण के लिए चिन्तन पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करता है । इस शिल्प - विधि को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है और कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यासों में मुख्यतया अन्तिम दो शिल्प - विधियों का ही प्रयोग किया है ।

§1§ मनोवैज्ञानिक प्रधान

§2§ दर्शन प्रधान

§3§ चेतना - प्रवाहवादी

§4§ पूर्व दीप्ति शिल्प - विधि

§1§ चेतना प्रवाहवादी विश्लेषणात्मक शिल्प - विधि :

इस विधि को अंग्रेजी में § Stream of consciousness § कहते हैं । इसके विषय में विलियम जेम्स लिखते हैं -- "मस्तिष्क की प्रत्येक निश्चित मूर्ति उसमें स्वच्छन्दता पूर्वक प्रवाहित होने वाले जल प्रवाह के रंग में डूबी रहती है । इस मूर्ति को सार्थकता एवं महत्व प्रदान करने वाली वस्तु यही ज्योतिर्वलय या छायावेष्ठित ज्योति है, जो संरक्षक भाव से सदा उसे आवृत रखती है । चेतना अपने समस्त छोटे - मोटे टुकड़ों में कटकर उपस्थित नहीं होती, इसमें कहीं जोड़ नहीं, यह प्रवाहमय होती है । इसे हमें चेतना के विचार का या आत्मनिष्ठ जीवन का प्रवाह ही कहना चाहिए ।" §1§ इस विधि में व्यक्ति विगत घटनाओं के सम्बन्ध में चिन्तन करने बैठता है और बीच - बीच में वह वर्तमान को भी समेटता चलता है, अतः उसके चिन्तन में अतीत तथा वर्तमान आपस में टकराते हैं । कमलेश्वर जी के उपन्यासों में "तीसरा आदमी" और "लौटे हुए मुसाफिर" आदि उपन्यासों में भी देखे जा सकते हैं ।

---

1. "Every definite image in the mind is seeped and dyed in the free water that flows round it. The significance, the value of the image is all in this helo or penumbra that surrounds & escarts it........ consciousness does not appear to it self chopped up in bits.......... It is nothing jointed .... It flows........ Let us call it the stream of thought of consciousness or of subjective life ".

Principles of psychology (1980) William James P.86

इस शिल्प - विधि में उपन्यासकार की ओर से कहीं भी विश्लेषण, टीका - टिप्पणी या व्याख्या करने का प्रयत्न नहीं होता । उपन्यास के चरित्रों की बौद्धिक चेतना में प्रवेश कर हम उन्हें भीतर से देखते हैं । इसमें भावों के स्वच्छन्द सम्मिलन की सुविधा रहती है । किसी भी चरित्र के मस्तिष्क में वर्तमान गृहीत बिम्ब का सम्बन्ध अतीत जीवनगत स्मृतियों से जोड़ा जाता है ।

§2§ पूर्व दीप्ति शिल्प - विधि :

यह विधि विश्लेषणात्मक विधि का ही एक नया रूप है । इसमें उपन्यासकार वर्तमान से सम्बद्ध जीवन - स्थिति को पात्रों के स्मृति - खण्डों के रूप में बिखेरता चलता है । पात्र कथा कहते - कहते अकस्मात् प्रसंग के सूत्र को अतीत की किसी घटना के सूत्र से जोड़ देते हैं, जिससे कथा की गति बनी रहती है । इस विधि में मनोविज्ञान का समावेश आवश्यक है । ऐसे उपन्यास वस्तुतः किसी मानसिक स्थिति के आधार पर खड़े होते हैं । कथानक का निर्माण अन्तर्जगत् को लक्ष्य में रखकर किया जाता है । कथा का आरम्भ एक शब्द विशेषण या स्मृति विशेष पर आधारित होता है जो असाधारण होती है और अन्तर्मन को आन्दोलित करती रहती है । जो असाधारण होती है और अन्तर्मन को आन्दोलित करती रहती है । उदाहरण के लिए कमलेश्वर जी के एक उपन्यास से एक दृष्टान्त प्रस्तुत है -

" और यह मन की दूरबीन । कितनी दूर अतीत में ले जाती है - अतीत की यात्रा पर । एक ऐसी यात्रा पर, जो अधूरी छूट गयी थी । पच्चीस बरस पहले जो रूकी रह गयी थी ... ।

पता नहीं, अब कैसी होगी चंदा । होगी भी या नहीं, उसी घर में होगी या कहीं और ? उसके बूढ़े बाप का क्या हाल होगा ? वे जीवित होगें या नहीं ? वह मकान उसी जगह होगा या नहीं ? चंदा ने उसके जाने के बाद कब तक प्रतीक्षा की होगी ? की भी होगी या नहीं ? शायद शादी करके वह घर - गृहस्थी बसाकर अपने में खुश हो । और अब इस तरह पहुंचना ठीक न हो । वह पहचाने या न पहचाने । पहचान कर भी पहचानने से इनकार कर दे या घृणा से मुँह फेर ले या सीधे - सीधे पूछे -- अब क्यों आये हो ?"§1§ जिस परिस्थिति में कमल बोस चंदा को छोड़कर चले आने के बाद वे

---

1. कमलेश्वर : आगामी अतीत - पृ0 - 15 - 16

चंदा को याद करते हैं । इस छोटे से उद्धरण में लेखक ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है वह उचित है । कमलेश्वर जी के डाक बँगला उपन्यास में भी इस विधि के उदाहरण देखे जा सकते हैं ।

इस विधि की यह एक विशेषता है कि वह वैयक्तिक तत्वों से परिपूर्ण कल्पनातीत मनोविश्लेषणात्मक प्रसंगों से अवतीर्ण होकर, पात्र के मुख से कही जाने वाली आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत होती है । प्रारम्भ हमेशा कौतूहल वर्धक होता है, किन्तु कथा - कौशल श्रृंखला गौण हो जाने के कारण अपूर्ण रह जाता है । इसविधि की रचनाओं में अतीत का महत्व अक्षुण्ण रहता है ।

कमलेश्वर जी के उपन्यासों का शिल्प शैष्ठव आधुनिकतम शिल्प के विविध प्रयोगों के प्रति आकर्षण रहा है । इसीलिए उन्होंने नई कहानी ॥समांतर कहानी॥ जैसे प्रयोग भी किये जिनका शिल्प - शैष्ठव आम रचनाओं से परे है ।

भाषा शैली :

भाषा - शैली ही एक ऐसा तत्व है जिसके माध्यम से कोई साहित्यकार अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति करता है । प्रत्येक साहित्यकार की भाषा - शैली पृथक - पृथक होती है ।

कमलेश्वर जी ने कहानियों में मुख्य रूप से भाषा शैली, स्थान - स्थान पर कथ्य के अनुरूप कस्बे की भाषा का ही है । उनकी कहानियों में यह प्रवृत्ति न केवल प्रथम दौर की कहानियों में अपितु बम्बई आने के बाद की कहानियों में भी परिलक्षित होती है । इसे हम भाषा में मात्र बोलचाल का ही रंग नहीं कह सकते अपितु पात्रों की मानसिकता के अनुरूप भाषा ढलती चली गयी है । "धूल उड़ जाती है" में साईं कहता है, "कोई अपना बिरादार होता तो एक बात भी थी .... तू तो पगला गयी है ... ।"॥1॥ यहाँ बिरादर और ॥पगला जाने" की बात के द्वारा साईं की मानसिकता को बहुत अच्छी तरह अभिव्यक्ति मिली है । "राजा निरबंसिया" में सास ने चन्दा को "गृहस्थी का ढंग चार समझा दिया ।"॥2॥ यहाँ "ढंग-चार" न तो देशज प्रयोग है और न ही परिविष्ठित रूप में उसका प्रयोग होता है । यह तो कस्बे की शैली का अपना रंग है जिसमें गहन अर्थ संप्रेषण क्षमता है । इसी प्रकार "गरमियों के दिन" कहानी का प्रारंभिक वाक्य है "चुंगी दफ्तर खूब रंगा चुंगा है ।"॥3॥ मे सामान्य शब्द है किन्तु इनका क्रम नियोजन और

1. राजा निरबंसिया - पृ0 - 47 ॥2॥ पूर्वोक्त - पृ0 - 80 ॥3॥पूर्वोक्त- पृ0-135

संगति ऐसी है कि एक विशेष वातावरण को केवल दो शब्दों में साक्षात कर दिया गया है । जहां उन्होंने भाषा को बोलचाल का रंग दिया है वहां भी लहजा कस्बे के पात्रों का ही है, यथा "मरदों के लच्छनों का कुछ पता नहीं, बहिनी।"§1§ देशज शब्दों का प्रयोग भी कमलेश्वर यत्र-तत्र बड़ी सूझ - बूझ के साथ प्रभाव सक्षम रूप में करते हैं --- " एक दिया बारती और अगर की बत्तियाँ जलाती ।"§2§ वैद्य जी "दुकान का दरवाजा भटखुला करके बैठ गये ।"§3§ इसी प्रकार मुहावरों का प्रयोग भी उसी परिवेश को लक्षित कर किया गया है "ऐरे - गैरे पचकल्यानी जितने घुस आये थे ।"§4§ उनकी "साँप" कहानी में तो आदि से अंत तक अधिकांशतः देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है । यहाँ भाषा पूरी तरह जन - जीवन से उठा कर रख दी गयी है । वहाँ भाषा का रंग प्रायः ऐसा रहा है -- हर वक्त चिकिर - मिकिर लगाये रहता है साला ।" "भेट के जाते बकूरता है बदमास ।"§5§ ऐसे कितने ही उदाहरणों से इस बात को सिद्ध किया जा सकता है कि कमलेश्वर ने भाषा का रचाव कस्बे के पात्रों की मानसिकता के अनुरूप किया है ।

इस प्रकार कमलेश्वर ने विविध रूपों में कस्बे के जीवन को बड़ी खूबी से अपनी कहानियों में उभारा है । "मान सरोवर के हंस" कहानी में कथा - नायक कहता है " मैं मैनपुरी में था । वहीं धूल धक्कड़ भरा छोटा सा शहर ।" "एक बार मैं तुम्हें अपने इस छोटे शहर में लाऊँगा जरूर ।"§6§ हमें इसमें यह और जोड़ना है कि कमलेश्वर का कहानीकार अपने पाठक को हर कथा - दौर में अपने इस छोटे से शहर में घुमाता रहा है, उसका पूर्ण अंतरंग परिचय देते हैं ।

---

1. "माँस का दरिया ", पृ० - 57
2. "राजा निरबंसिया", पृ० - 99
3. पूर्वोक्त - पृ० - 142
4. पूर्वोक्त - पृ० - 137
5. साँप : कमलेश्वर - सम्पादक - मधुकर सिंह - पृ० - 57
6. सारिका, अप्रैल, 1973 अंक - पृ० - 86

§आ§ कमलेश्वर जी के उपन्यासों में सम्वाद :

कथोपकथन उपन्यास का अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व है । यदि कथा में से इस तत्व को निकाल दिया जाय तो सबसे बड़ा दोष होगा । कथा के पात्रों का अव्यक्त हो जाना । परिणामस्वरूप कथा की कलात्मकता, प्रभ-विष्णुता एवं संवेदनशीलता नष्ट प्रायः हो जायगी । अतः कथा - साहित्य में अन्य तत्वों की अपेक्षा इस तत्व का महत्व अधिक है । कथानक विन्यास के सौन्दर्य का उद्घाटन तर्क - वितर्क और प्रतिपादन से किया जाता है अथवा चरित्रांकन में किसी मनोवैज्ञानिक पार्श्वभूमि में किस प्रकार की वृत्ति का आभोग सिद्ध होता है, यह कल्पनाजन्य अनुभूति से समझने की चेष्टा करने पर जाना जा सकता है, किन्तु कथोपकथन अपने प्रकृत्व औचित्य एवं व्यवहारिक रचना से ही अपने सौन्दर्य एवं आकर्षण को समझा देते हैं । इसमें तर्क - वितर्क, चिन्तन - मनन की उतनी अपेक्षा नहीं रखी जाती । यदि देशकाल और संस्कृति विशेष का कोई प्राणी किसी से भी किसी प्रकार की बातचीत करता है, तो बातचीत की प्राँजलता और विदग्धता, शब्द और वाक्य के प्रयोग भाषा और पदावली से हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि व्यक्ति किस कोटि, वर्ग, देश और काल का है । संवाद से अन्य सभी तत्वों का सीधा सम्बन्ध होता है । "§1§ इससे कथानक में कथोपकथन का क्या महत्व है, यह स्पष्ट हो जाता है । सम्वाद के लिए कथोपकथन शब्द का भी प्रयोग किया जाता है । प्रो० जनार्दन प्रसाद झा "द्विज" ने कथोपकथन के उद्देश्य बतलाते हुए लिखा है — "घटनाओं को प्रगतिशील बनाना तथा पात्रों के शील - स्वभाव पर पूरा - पूरा प्रकाश डालना ही कथोपकथन का मुख्य उद्देश्य होता है ।"§2§ इससे वस्तुविधान तथा शील - निरूपण की प्रणाली सुगमता, सरसता तथा मनोरंजकता की अभिवृद्धि होती है । ऊपर दिये गये दो उद्देश्यों के अतिरिक्त अन्य भी कुछ उद्देश्यों से कथोपकथन का प्रयोग कथानक में होता है । मुख्य रूप से संवादों का प्रयोग कथानक में सामान्यतः निम्न उद्देश्यों से किया जाता है --

1. कथानक को गति प्रदान करना
2. पात्रों के चरित्र का विश्लेषण करना
3. कथाकार उद्देश्य को स्पष्ट करना
4. कथोपकथन के व्याज से पूर्व संकेत देना, तथा
5. कथोपकथन के माध्यम से वातावरण - सृष्टि करना आदि ।

---

1. कहानी का रचनाविधान - डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा - पृ० - 12।
2. प्रेमचन्द की उपन्यास कला - प्रो० जनार्दन प्रसाद झा "द्विज" - पृ० - 7।

कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यासों में चतुर्थ उद्देश्यों की पूर्ति के हेतु सम्वादों को प्रयुक्त किया है । यहाँ हम यह स्पष्ट करेंगे कि कमलेश्वर जी ने कथोपकथनों का प्रयोग किस प्रकार किया है और उनके सम्वाद उपन्यासों में क्या महत्व रखते हैं और वे कथोपकथन की रक्षा किस सीमा तक कर सके हैं ।

§1§ उपन्यासों में कथानक को गति देने वाले संवाद :

उपन्यास में सम्वादों के समावेश से एक ओर जहाँ कथासूत्र क्षिप्र गति से आगे चलता है वहीं दूसरी ओर नवीन कथासूत्रों का निर्माण भी होता है । नवीन कथासूत्र की सृष्टि तब होती है, जब दो पात्रों के विचारों में अन्तर के कारण संघर्ष का उद्भव होता है । इस संघर्ष तथा नवीन कथासूत्र के उद्गम का स्पष्टीकरण सम्वादों द्वारा ही सम्भव है । कथा गतिशील रहे केवल यही आवश्यक नहीं है, वरन् कथा के क्षिप्र गति से आगे बढ़ने के साथ सजीवता, चित्रमयता तथा कलात्मकता की भी सृष्टि करने में वह समर्थ होनी चाहिए । यह कार्य भी कथोपकथन द्वारा ही संभव हो सकता है, किन्तु इस बात का विस्मरण नहीं होना चाहिए कि इस तत्व का क्षिप्र एवं सुगठित प्रयोग एक ओर जहां कथा मार्ग को उत्कर्षोन्मुख करता है, वहां दूसरी ओर स्वच्छन्द, अनियन्त्रितता, आवश्यक तथा कथा की गति को अवरुद्ध करने वाले अरोचक सम्वादों का प्रयोग कथा को बोझिल एवं अकलात्मक बना देता है । अतः यह नितान्त आवश्यक है कि सम्वादों का कथासूत्र से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो । कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों के कथोपकथनों में इस बात का विशेष ध्यान रखा है । इसी से उनके उपन्यास अनियन्त्रित एवं अरुचिकर नहीं हुए हैं । उन्होंने कई स्थानों पर कथोपकथन के द्वारा ही कथा को दूसरी दिशा में मोड़ दिया है । कथा के ये मोड़ स्वभाविक कथोपकथन के कारण अस्वभाविक भी नहीं होने पाये हैं । उदाहरणार्थ प्रस्तुत है -- विमल और इरा के बीच हुआ वार्तालाप । इरा विमल से पूछती है क्या करते रहे इतने बरस .... तो वह बोला ... इरा ! "शायद तुम मेरी बेचैनी नहीं समझ पाओगी .... पर उस मजबूरी को जरूर समझ सकती हो, जो तुमने मेरे साथ भोगी थी। मेरी और मेरे जैसे लाखों नौजवानों की असफलता के कारणों पर कभी तुमने गौर किया है ? क्यों हम इस तरह सड़ने - गलने और मर जाने के लिए मजबूर हैं ? कभी सोचा है ? तपेदिक के ये किटाणु तो बहुत बाद में मुझे मिले हैं ..... पर जो कीटाणु पूरी जिन्दगी को खा रहे हैं उन्हें कभी तुमने देखा है ? .... मैं तुमसे क्या कहता .... उन्हीं दिनों मुझे लगने लगा था कि "शकुंतला" नाटक करने से कुछ नहीं होगा अब ...... अगर हमें

सार्थक होकर जीना है तो सब कुछ बदलना होगा ..... सबसे पहले बदलना होगा इस दोगली अर्थव्यवस्था को, जिसमें चूसे जाने के लिए हमें छोड़ दिया गया ..... इस शांतिमय विकास से कुछ नहीं होगा .... जिस अवरुद्ध क्रांति में हम फंस गए हैं, उसे पूरा करना होगा .... जब तक सड़ती हुई इस क्रांति के कीटाणु नहीं खत्म होंगे, तब तक इस देश में हम और तुम यों ही सड़ - सड़कर और अपमानित होकर मरने के लिए मजबूर होंगे । लेकिन .... लेकिन इरा.... अब कुछ भी होता दिखाई नहीं देता । "§1§

प्रस्तुत कथोपकथन के प्रारम्भ से तो ऐसा आभास होने लगता है कि विमल बरसों के बाद इरा को मिला है और अब वे दोनों कभी अलग नहीं होंगे किन्तु आखिर में विमल की मृत्यु हो जाती है और इरा वहीं की वहीं रह जाती है । इसी तरह कथोपकथन में अनेक मोड़ आते रहते हैं और कथा अन्त की ओर अग्रसर होती रहती है । ऐसे कितने ही उदाहरण कमलेश्वर जी के उपन्यासों में प्राप्त होते हैं । साथ ही कथा को गति प्रदान करने के लिए कमलेश्वर जी नाटकीय संवाद की भी प्रयोग किया है । "काली आँधी" उपन्यास से इस प्रकार का एक उदाहरण प्रस्तुत है । मालती जी पर जब चरित्र के बारे में लोग कहते हैं तब मालती कहती है — "मैंने अपने पति को लाकर आपकी अदालत में खड़ा कर दिया । अब मेरे बारे में, मेरे चरित्र के बारे में, मेरी बच्ची के बारे में आप जो कुछ पूछना चाहें .... इन्हीं से पूछ लीजिए । मेरे पास सबसे बड़ा जवाब यही है । मेरे पति ...... और ये आपके सामने मौजूद हैं -- इससे ज्यादा मैं और क्या कह सकती हूँ । एक औरत अपने चरित्र पर लगे इल्जाम का सबसे बड़ा सबूत क्या दे सकती है ! कहते - कहते मालती जी का गला रुंध गया था । उनसे बोला नहीं जा रहा था ।"§2§ इस प्रकार मालती जी अपनी सफाई बताकर जनता के मन में अपना स्थान प्राप्त करना चाहती है और ऐसा ही होता है । वे चुनाव जीत जाती हैं ।

§2§ <u>कथोपकथनों द्वारा पात्रों के चरित्र का विश्लेषण :</u>

कथोपकथन का दूसरा प्रधान कार्य पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसे स्पष्ट करना है । कथानक पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व पर ही अवलम्बित होता है, अतः सम्वादों का सीधा सम्बन्ध पात्रों से है । सम्वाद के अभाव में न तो पात्रों के

---

1. कमलेश्वर : "डाक बंगला" - पृ० - 99
2. कमलेश्वर : "काली आँधी" - पृ० - 90

व्यक्तित्व की रेखा उभर सकेगी, न ही उनके चरित्र का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा। किसी पात्र के सम्बन्ध में लेखक भले ही सब कुछ कह डाले, परन्तु जब तक पात्र स्वयं कुछ नहीं कहेगा, तब तक पाठक सन्तुष्ट नहीं होंगे, न ही नैकट्य की उन्हें अनुभूति होगी। पाठक जानना चाहता है कि अमुक पात्र के विषय में अन्य पात्रों की क्या राय है ? यह जानकारी उपन्यासकार पाठकों को केवल संवादों के द्वारा दे सकता है। कमलेश्वर जी ने पात्रों के चरित्र को उभारने के लिए कथोपकथनों की ही सहायता ली है। उनके सम्वाद एवं स्वगतोक्तियां पात्रों के हृदय को पूर्णरूपेण खोलकर सामने रख देते हैं। इसी से पात्रों के चरित्र का विश्लेषण होने के साथ ही कथानक भी आगे बढ़ता रहता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -- "बारिश में बुरी तरह भीगता और सर पर बोरा डाले हुए बदरी आया। उसकी आँखों में आग और आश्चर्य था। साईं की कोठरी में अब भी धुआँ ठहरा हुआ था। भीगा हुआ बोरा लकड़ियों पर डालते हुए वह एकदम बोला -- "गजब हो गया साईं ! अब बस्ती में ये हरकतें होंगी ? वह तुम्हारा सत्तार ...।"

साईं बीच ही में बोला - "किस्मत है सत्तार की .... अच्छा - खासा नौजवान है .... जानू की बीबी की रूह का मन उस पर आ गया है .... और रूहों के बारे में साईं भी कुछ नहीं कर सकता। रूहों की जिन्दगी में मैं दखल नहीं देना चाहता ...। बदरी ने सुना तो जोर देकर बोला -- "साईं, वह रूह नहीं, हाड़ - मांस की सलमा थी। मैंने अपनी आँखों से देखा है, इन्हीं आँखों से।"[1] दूसरा उदाहरण हम "डाक बंगला" उपन्यास में देखते हैं -- " शीला ने आते ही घर को सलीके से सजाया - सारी चीजों में अपनी रुचि की छाप लगा दी। बतरा का कमरा तो उसने एकदम बदल दिया। सिर्फ सोने के फ्रेम में जड़ी हुई उस अनजान औरत की तस्वीर वहीं लगी रही। बतरा के बारे में जो रहस्यमयता थी, वह कुछ थोड़ी सी और बढ़ गई थी। कैसा आदमी है यह, जिसने कभी अपनी बीबी के बारे में बताया तक नहीं, और जिसे अब वह इतने प्यार से रख रहा था, उसकी याद तक उसे कभी नहीं आई। शीला की एक तस्वीर ही उस जालिम ने कहीं रखी होती। घर में कोई तो निशानी होती उसकी।

शीला के आने के बाद बतरा की दिनचर्या ही बदल गई थी ... शराब वह अब और ज्यादा पीता था, पर अपने को उतना ही काबू में रखता था। शाम होते ही वह शीला के साथ सैर - सपाटे के लिए चला जाता था। क्लब जाना एकदम बन्द हो गया था।"[2]

---

1. कमलेश्वर : "लौटे हुए मुसाफिर" पृ० - 47 - 48
2. कमलेश्वर : "डाक बंगला" - पृ० - 46

ऐसे कई उदाहरण है जो चरित्र को स्पष्ट करते हैं । आदि सभी चरित्र - प्रकाशक सम्वाद हैं । इन कथोपकथनों के माध्यम से पात्रों के चरित्र को उभारा गया है ।

§3§ कथोपकथन द्वारा अपने उद्देश्य को स्पष्ट करना :

कई स्थलों पर कृतिकार कथोपकथनों की सहायता से ही अपने उद्देश्य को स्पष्ट करता है । अपने विचारों को स्पष्ट करने हेतु उसे पात्रों के संवादों का ही अवलम्ब लेना पड़ता है । किसी भी पात्र के माध्यम से वह अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है । यद्यपि कुछ विद्वानों ने इसे लेखक के अधिकार का दुरूपयोग माना है, किन्तु एक सीमा तक ऐसा किया जाये तो हमारी दृष्टि से यह दुरूपयोग नहीं है । कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यासों में यथावश्यक यह प्रयोग किया है । "सत्तार जब अपनी कोठरी में आया तो उसका मन बहुत भारी था । उसके दिमाग में तरह - तरह के ख्याल आ - जा रहे थे । उसे यह लगता था कि शायद पाकिस्तान बनने से एक नई जिन्दगी की हदें खुल जाएँ । कुछ ऐसा हो कि उसे अपनी बेकारी और नाकामी से मुक्ति मिल जाए, एक नया रास्ता मिल जाये जो जिन्दगी को खुशहाल कर दे । पर रह - रहकर उसे यह भी भ्रम होता था कि यह सब कुछ होगा नहीं । कैसे होगा ? करोड़ो मुसलमानों के बीच उसकी बिसात ही क्या है ? कौन पूछेगा उसे ? ... तभी मकसूद की वह बात कि वह बाहर जा रहा है, उसके दिमाग में एकाएक कौंधी थी .... एक नरम-सा हाथ उसे सहला गया था और उसने तय किया था कि वह सलमा से मिलेगा .... ।"§1§

इस प्रकार उपन्यास कार ने देश के विभाजन के बारे में विचार सत्तार के जरिए व्यक्त किया है । यह कथोपकथन स्वाभाविक जान पड़ता है । सत्तार के चारित्रिक गुण उपर्युक्त कथोपकथन से स्वयं ही स्पष्ट हो जाते हैं ।

§4§ वातावरण सृष्टि :

कथोपकथन का उद्देश्य वातावरण सृष्टि एवं देशकाल का बोध करना भी है । संस्कृति या समाज को प्रत्यक्ष करने के लिए कथोपकथन एक अच्छा माध्यम है । यहाँ वेश्याओं के कोठे पर बिना रूपये के आदमी का क्या हाल होता है, उस कोठे का वातावरण

---

1. कमलेश्वर : "लौटे हुए मुसाफिर" - पृ0 - 66

निर्माण इस संवाद से होता है । -- " लकड़ी की सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ एक आदमी सड़क पर आ गिरा था । और सीढ़ियों के ऊपर चौखट पर एक हाथ रखे खड़ी थी एक लड़की - बीड़ी का कश लेकर गालियाँ बकते हुए । "चले आते हैं, मरदुए । इश्क लड़ायेंगे ...... अबे, यहाँ धंधा होता है, धंधा ! इश्क नहीं .... अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुख्ता करके आना .... ।" सड़क पर आकर गिरे हुए आदमी ने उठकर इतना ही कहा था — "मेरे जूते ?" उसके जूते ऊपर रह गये थे । उस फ़ाहिशा लड़की ने तड़ा-तड़ दोनों जूते ऊपर से फेंक दिये थे और चीखी थी -- "ये तेरी अम्मा का घर नहीं है ! समझा ! " और हाथ मटकाती चौखट का सहारा लिये वह वहीं जड़ी खड़ी रही जैसे उसे किसी की परवाह न हो ।" (1)

कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यासों में वातावरण निर्माण के लिए इस प्रकार के कितने ही सम्वादों की सृष्टि की है ।

---

1. कमलेश्वर : "आगामी अतीत" - पृ0 - 66

-=: 16 :=-

कथोपकथन :-

उपन्यास और कहानियों में कथोपकथन के समावेश का उद्देश्य एक ही होता है । कहानी में भी कथोपकथनों का प्रयोग मुख्य रूप से कथावस्तु के विकास एवं पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए किया जाता है, किन्तु उपन्यास और कहानी के संवाद-धर्म में किंचित् भिन्नता भी होती है । कथा साहित्य के अन्तर्गत उपन्यास में इसका स्वच्छंद, अनियंत्रित और अपरिमित विहार मिलता है, परन्तु कहानी में इसका लघु-प्रसारी, वैदग्ध्यपूर्ण, आकर्षक और चमत्कारी प्रयोग ही इष्ट होता है ।"(1)

कमलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में कथोपकथन का खुलकर प्रयोग किया है । उनके संवादों की विशेषता है कि उनसे एक साथ कई उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है । -"बयान" कहानी से एक उद्धारण द्रष्टव्य है --

"इससे ज़्यादा मैं क्या बता सकती हूँ । एक आदमी-औरत के बीच में जो कुछ होता है, वह होता है । उसके संबंधों की बुनियाद सिर्फ़ उन्हीं में नहीं होती........

जी, मैं बहक नहीं रही हूँ । सुनना है तो पूरी बात सुनिए । टुकड़े-टुकड़े बातों से मेरा जी बहुत घबराता है । अगर आप सिर्फ़ मेरी शादी से कुछ पहले की, कुछ बीच की और अंत की बातें ही जानना चाहते हैं, तो मैं मशीन की तरह बताती जाऊँगी, क्योंकि मुझे बतानी पड़ेंगी । खामोश रहकर मैं न आपके कानून से बच सकती हूँ, न लोगों की हिकारत से और न अपनी बच्ची के सवालों से......

सिवा मेरी ज़िंदगी के-- कोई और जवाब मेरे पास नहीं है । जो कुछ है, वह मेरी ज़िंदगी में ही बिखरा हुआ है । वे लमहे, जिन्हें मैं कभी बिखरने नहीं देती, वे भी अब यादों से छिटक गये हैं, या छिटक रहे हैं । अब मुझे छुपाना क्या है ? किसके लिए और क्यों ?"(2)

इस सम्पूर्ण वार्तालाप से पात्रों का चरित्र और उनकी मानसिक स्थिति

---

(1) डॉ॰ जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, कहानी का रचना-विधान, पृ॰ 122.
(2) "बयान" - कमलेश्वर - पृ॰ 94.

का प्रकाशन तो होता ही है, साथ ही आगे की कथा के नवीन मोड़ की सूचना भी मिल जाती है । कमलेश्वर जी की कहानियों में संवादों से अधिकाधिक काम निकालने के लिए उनका प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि उनसे पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ भी उद्घाटित होती जाएँ और कथा का विकास भी होता जाए ।

"राजा निरबंसिया अस्पताल से लौट आए......... कुलमा भी आई हैं ।" ये शब्द सुनकर घर के अँधेरे बरोठे में घुसते ही जगपती हाँफकर बैठ गया, झुंझलाकर चन्दा से बोला, -"अँधेरे में क्या मेरे हाथ-पैर तुड़वाओगी ? भीतर जाकर लालटेन जला लाओ न ।" "तेल नहीं होगा, इस वक्त ज़रा ऐसे ही काम......"

"तुम्हारे कभी कुछ नहीं होगा..... न तेल न......." कहते कहते जगपती एकदम चुप रह गया । और चन्दा को लगा कि आज पहली बार जगपती ने उसके व्यर्थ मातृत्व पर इतनी गहरी चोट कर दी, जिसकी गहराई की उसने कभी कल्पना नहीं की थी । दोनों खामोश, बिना एक बात किए अन्दर चले गए । ....जगपती के कानों में जैसे कोई व्यंग्य से कह रहा था- राजा निरबंसिया अस्पताल से आ गए ।

और चन्दा के दिल में यह बात चुभ रही थी- तुम्हारे कभी कुछ नहीं होगा........"﴾1﴿

कमलेश्वर जी कुछ कहानियाँ तो ऐसी हैं, जिनमें कहानी का सम्पूर्ण सौन्दर्य कथोपकथन में ही केन्द्रित हो गया है । "खोयी हुई दिशाएँ" नामक कहानी संग्रह में "एक अश्लील कहानी" के चन्द्रनाथ और वर्मा के वार्तालाप से हमें नारी जाति पर किया गया व्यंग्य देखने को मिलता है । जब एक महिला चन्द्रनाथ के पास से गुजरती है तब चन्द्रनाथ शैतानीपन करता है तब वर्मा कहता है कि-"यह बदतमीजी है, इसीलिए मैं ऐसे लोगों के साथ रहना पसन्द नहीं करता......।"

चन्द्रनाथ एकाएक तिलमिला उठा, -"मतलब क्या है आपका ? मैं अगर शरीफ़जादा नहीं हूँ तो ये भी शरीफ़जादियाँ नहीं हैं । समझे आप ? ये लोग यही

﴾1﴿ "राजा निरबंसिया" - कमलेश्वर - पृ. 19.

चाहती हैं कि कोई इन्हें देखे और फ़ब्तियाँ कसे । इससे इनका अहं सन्तुष्ट होता है और इन्हें अपनी ख़ूबसूरती पर गर्व होता है...........।"

"मैं पूछता हूँ, इन औरतों का काम क्या है ? भरे हुए घरों में यह रह नहीं सकतीं, शादी से पहले अलग घर के सपने इनके दिमाग़ में मँडराने लगते हैं, शादी के बाद ये बच्चे पैदा करने से कतराती हैं, नौकरी इनसे हो नहीं सकती, घर का काम ये कर नहीं सकती, आखिर ये करना क्या चाहती हैं ? इनकी जिन्दगियाँ किस लिए हैं ? इसके सामने कौन-सा आदर्श है जिसके लिए ये जीना चाहती हैं ।"§।§

उपर्युक्त सम्वाद से कमलेश्वर जी ने एक नारी के बारे में उसका चित्र अंकित किया है । चन्द्रनाथ और वर्मा का वार्तालाप अद्भुत अभिव्यंजना-शक्ति का परिचय देता है । इन दोनों के सम्भाषण से कहानीकार ने कितना कुछ कह दिया है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में अत्यन्त सार्थक एवं उपयुक्त संवादों का प्रयोग किया है । वह इतने चुस्त हैं कि थोड़े में बहुत-सी बातें कह जाते हैं । कमलेश्वर जी की कहानियों में सैद्धांतिक वाद-विवाद के स्थल बहुत कम हैं, इसलिए कथोपकथन संक्षिप्त हैं । कथोपकथन वहीं अधिक लम्बे हैं, जहाँ पात्रों के माध्यम से कोई विशेष घटना या परिस्थिति का उल्लेख किया गया है । ऐसे स्थलों पर भी कथारस के कारण रोचकता बनी रही हैं और संवाद की लम्बाई पात्रों की परिस्थिति, क्रिया-प्रतिक्रिया, मुखमुद्रा आदि का विवेचन करने के लिए कहानीकार सदैव पात्रों के साथ रहता है । इससे पात्रों के कथोपकथन अधिक प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति पाते हैं तथा कहानी का अभिव्यंग्य कुतूहल एवं जिज्ञासा बनाए रखते हुए भी अपनी स्पष्ट ध्वनि छोड़ जाने में समर्थ होता है ।

कमलेश्वर जी के उपन्यासों की ही भाँति उनकी कहानियों के संवादों की भी सबसे बड़ी विशेषता उनकी स्वाभाविकता, पात्रानुकूलता एवं भावानुरूपता है । भाव या पात्र के अनुरूप कथनों को गढ़ना कमलेश्वर जी को ख़ूब आता है ।

---

§।§ "खोई हुई दिशाएँ" कहानी संग्रह की "एक अश्लील कहानी" - पृ. 18-19.

कमलेश्वर जी की कहानियों में ग्रामीण या अल्पशिक्षित पात्र कम हैं, किन्तु जहाँ वे थोड़ी देर के लिए भी आए हैं, अपनी स्थानीय बोली का प्रभाव छोड़ ही गए हैं।

यद्यपि हम कमलेश्वर की कहानियों की भाषा पर विस्तार से विचार उनकी कहानियों की शिल्पचर्चा में कमलेश्वर की भाषा का रचाव स्थान - स्थान पर कथ्य के अनुरूप कस्बे की भाषा का ही है । उनकी कहानियों में यह प्रवृत्ति न केवल प्रथम दौर की कहानियों में अपितु बम्बई आने के बाद की कहानियों में भी परिलक्षित होती है । इसे हम भाषा में मात्र बोलचाल का ही रंग नहीं कह सकते अपितु पात्रों की मानसिकता के अनुरूप भाषा ढलती चली गयी है । "धूल उड़ जाती है" में साईं कहता है, -"कोई अपना बिरादर होता तो एक बात भी थी.... तू तो पगला गयी है.......।"§1§ यहाँ बिरादर और "पगला जाने" की बात के द्वारा साईं की मानसिकता को बहुत अच्छी तरह अभिव्यक्ति मिली है । "राजा निरबंसिया" में सास ने बहू चन्दा को "गृहस्थी का ढंग चार समझा दिया ।"§2§ यहां "ढंग चार न तो देशज प्रयोग है और न ही परिनिष्ठित रूप में उसका प्रयोग होता है । यह तो कस्बे की बोली का अपना रंग हैं जिसमें गहन अर्थ संप्रेषण क्षमता है । इसी प्रकार "गरमियों के दिन" कहानी का प्रारंभिक वाक्य है "चुंगी दफ्तर खूब रंगा चुंगा है ।"§3§ ये सामान्य शब्द है किंतु इनका क्रम नियोजन और संगति ऐसी है कि एक विशेष वातावरण को केवल दो शब्दों में साक्षात कर दिया गया है । जहां उन्होंने भाषा को बोलचाल का रंग दिया है वहां भी लहजा कस्बे के पात्रों का ही है, यथा "मरदों के लच्छनों का कुछ पता नहीं, बहिनी ।"§4§ देशज शब्दों का प्रयोग भी कमलेश्वर यत्र-तत्र बड़ी सूझ-बूझ के साथ प्रभाव सक्षम रूप में करते हैं- "एक दिया बारती और अगर बत्तियाँ जलाती ।"§5§ वैद्य जी "दुकान का दरवाजा भटखुला करके बैठ गये ।"§6§

---

§1§ कमलेश्वर : "राजा निरबंसिया" - पृष्ठ-47.
§2§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-80.
§3§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-135.
§4§ "माँस का दरिया" - पृष्ठ-57.
§5§ "राजा निरबंसिया" - पृष्ठ-99.
§6§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-142.

इसी प्रकार मुहावरों का प्रयोग भी उसी परिवेश को लक्षित कर किया गया है- "ऐरे-गैरे पचकल्यानी जितने घुस आये थे ।"§1§ उनकी "साँप" कहानी में तो आदि से अंत तक अधिकांशत: देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है । यहाँ भाषा पूरी तरह जन-जीवन से उठा कर रख दी गयी है । वहाँ भाषा का रंग प्राय: ऐसा रहा है -"हर वख्त चिकिर-मिकिर लगाये रहता है साला ।" "भेट के जाते बकूरता है बदमास ।"§2§ ऐसे कितने ही उदाहरणों से इस बात को सिद्ध किया जा सकता है कि कमलेश्वर ने भाषा का रचाव कस्बे के पात्रों की मानसिकता के अनुरूप किया है ।

इस प्रकार कमलेश्वर ने विविध रूपों में कस्बे के जीवन को बड़ी खूबी से अपनी कहानियों में उभारा है । "मानसरोवर के हंस" कहानी में कथा-नायक कहता है-"मैं मैनपुरी में था । वही धूल धक्कड़ भरा छोटा-सा शहर ।""एक बार मैं तुम्हें अपने इस छोटे-से शहर में लाऊँगा जरूर ।"§3§ हमें इसमें यह और जोड़ना है कि कमलेश्वर का कहानीकार अपने पाठक को हर कथा-दौर में अपने इस छोटे-से शहर में घुमाता रहा है, उसका पूर्ण अंतरंग परिचय दिया है ।

- -

§1§ पूर्वोक्त - पृष्ठ-137.
§2§ साँप §कमलेश्वर : सम्पा. मधुकर सिंह§ - पृष्ठ-57.
§3§ सारिका, अप्रैल, 1973 अंक - पृष्ठ-86.

-=:***:=-